International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 63-64

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(4): 63-64
www.allresearchjournal.com
Received: 12-02-2016
Accepted: 13-03-2016

डॉ. माधवी शर्मा
प्राचाय डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली अलवर

संजय मेहरा
शोधार्थी डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली अलवर

Correspondence
डॉ. माधवी शर्मा
प्राचाय डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली अलवर

सृष्टि प्रक्रिया भारतीय दर्शन से लेकर आधुनिक संदर्भ में

डॉ. माधवी शर्मा, संजय मेहरा

प्रस्तावना

जगत के संबंध में एक विद्वान का विचार है– जगत् हितैषी अथवा द्वेषी या मौजी देवताओं की लीला नहीं है। इसका अपना एक विधान है जिसे मानव बुद्वि समझ सकती है। वह विधान समस्त मानवीय विधान का मूल है तथा उसको प्रभावित एवं निर्धारित करता है।

इस सृष्टि की उत्पति क्यों और कैसे हुई ? जगत की स्थिति उसके विनाश आदि से संबंधित प्रश्नों पर व्याख्या करना इस जगत् या सृष्टि प्रक्रिया का उद्देश्य है। प्रत्येक दर्शन अपनी बौद्विक क्षमता के अनुसार इस जटिल प्रश्न पर विचार करने का प्रयास करता है। वे सृष्टि की समस्या पर चिंतन एवं गहन विमर्श द्वारा इस विश्व के निर्माण तथा विनाश का एक व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विधान प्रस्तुत करता है। भारतीय दर्शन परम्परा में दर्शन से पहले वेदों और उपनिषदों में इस प्रक्रिया पर विचार हो चुका है। ऋग्वेद वर्णित नासदीय सूक्त,पुरूष सूक्त,प्रजापति सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त इत्यादि सूक्तों में सृष्टि प्रक्रिया के विधान का वर्णन देखने को मिलता है। उपनिषद भी सृष्टि प्रक्रिया का वर्णन करते है। उपनिषदों में वर्णित प्रक्रिया से तो दर्शनों में वर्णित सृष्टि प्रक्रिया प्रभावित भी है। वृहदारण्यक उपनिषद् में बह्म ही सृष्टि का कर्ता माना गया है। इस प्रकार वेदान्त तो उपनिषदों से प्रभावित ही नजर आता है। अगर नास्तिक एवं आस्तिक दर्शनों पर विचार किया जाये तो चार्वाक जहां जडवाद को मानकर पञ्चभूतों के स्थान पर चार ही भूत मानता है। आकाश का प्रत्यक्षीकरण न होने के कारण चार्वाक के विश्व संबंधी विचारों में उसका स्थान नहीं है। आस्तिक दर्शन न्याय – वैशेषिक के सृष्टि – विचार भौतिकता से जुडे हैं। उसकी नजर में प्रत्येक भूत परमाणुओं के संयोग से बना है। इस प्रकार न्याय – वैशेषिक दर्शन ने अणुवाद को समर्थित किया है। इस सम्पूर्ण सृष्टि के पीछे मूल वजह प्रकृति पुरूष संयोग है एवं यह प्रकृति – पुरूष संयोग कैवल्य के लिए होता है। प्रकृति – पुरूष संयोग से इस सृष्टि का निर्माण सांख्य दर्शन मानता है। यह इस संयोग का एक अन्य प्रयोजन भी है। सांख्य में तीनों गुण (सत्व, रज और तम) की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है। सांख्य सूत्र में कहा भी गया है –

''सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः।''

अद्वैत वेदान्त की अगर चर्चा की जाए तो शंकर द्वारा वेदान्त में वर्णित सृष्टि– क्रम एक पृथक मार्ग है। उनके अनुसार प्रतिक्षण– परिणामों एवं सुव्यवस्थित व्यवस्था वाला जगत अचेतन परमाणु अथवा जड – प्रकृति का कार्य नहीं हो सकता । ऐसी सुचारू व्यवस्था तो किसी चेतन विवेक द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है। वेदान्त सांख्य मत के विपरीत सृष्टि – क्रम का एकमात्र कारण ब्रह्म को मानते हैं। और सृष्टि प्रक्रिया के फलस्वरूप पञ्चीकरण की प्रक्रिया से हमें अवगत कराते हैं।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य की अगर बात की जाए तो सृष्टि हमें वैशेषिक के अनुवाद का समर्थन करती नजर आती है। वर्तमान में सृष्टि उत्पति के बिग – बैग सिद्वान्त की सर्वाधिक मान्यता है। इस सिद्वान्त के अनुसार आज से 15 अरब वर्ष पहले एक विशाल अग्नि – पिण्ड था जिसकी रचना भारी पदार्थो से हुई है। इस विशालकाय अग्नि पिण्ड का अचानक विस्फोट हुआ जिस कारण पदार्थों का बिखराव हो गया। इन पदार्थों को प्रारंभिक सामान्य पदार्थ कहा गया । शीघ्र ही सामान्रू पदार्थों के अलगाव के कारण काले पदार्थों का सृजन हुआ। इन काले पदार्थों का आपस में समुहन होने के कारण अनेक पिण्डों का निर्माण हुआ। इन पिण्डों के चारो और सामान्य पदार्थों का जमाव होने लगा जिस कारण इनका आकार बढता गया इन पिण्डों के आकार में वृद्धि होने से आकाश गंगाओं का निर्माण हुआ। ज्ञातव्य है कि प्रारम्भ में ब्रह्माण्ड अत्यधिक छोटा था, परन्तु इसमें त्वरित गति से फैलाव होने लगा। परिणामस्वरूप आकाशगंगाये जो प्रारंभ में आस – पास थी वे निरन्तर दूर होती गयी। आज से लगभग 15 अरब वर्ष पहले अपने निर्माण काल से आज तक ब्रह्माण्ड आकार में लगातार फैलता जा

रहा है तथा उसके पदार्थ शीतल होते रहे है। आकाशगंगाओं का भी भयंकर विस्फोट हुआ तथा विस्फोट से निकल पदार्थों के समुहन से बने असंख्य पिण्डों द्वारा प्रत्येक आकाशगंगाओं के तारों का निर्माण हुआ इसी तरह प्रत्येक तारे के विस्फोट के कारण जनित पदार्थों के समुहन द्वारा ग्रहों का निर्माण हुआ। वैज्ञानिकों के अनुसार महाविस्फोट के बाद अत्यधिक ऊर्जा का अस्तित्व था। इसी समय इलेक्ट्रॉन जैसे कणों का निर्माण हुआ। फिर इन्हीं कणों का अत्यधिक ऊर्जा में टकराव से अधिक कणों का निर्माण हुआ इस समय कुछ कणों व प्रतिकणों का निर्माण हुआ इस समय कुछ कण व उनके प्रतिकण नष्ट हो रहे थे साथ में इसी समय इलेक्ट्रोन , प्रोटोन व न्यूट्रान का भी निर्माण हुआ। अति उच्च ताप पर ब्रह्माण्ड ने आकार लेना शुरू किया प्रोटोन व न्यूट्रॉन मिलकर हाइड्रोजन, हीलियम जैसे तत्वों का निर्माण कर रहे थे। तीन लाख वर्ष के पश्चात् विस्तार करता हुआ ब्रह्माण्ड से मेल नहीं खाता था। तत्व और विकीरण एक – दूसरे से अलग होना शुरू हो चुके थे। इसी समय इलेक्ट्रॉन, केन्द्र के साथ मिलकर परमाणु का निर्माण कर रहे थे। परमाणु मिलकर अणु बना रहे थे। इसके बाद ब्रह्माण्ड का एक निश्चित आकार शुरू हुआ। इसी समय ध्वासर हाइड्रोजन का निर्माण होने लगा। तारे हाइड्रोजन जलाकर भारी तत्वों का निर्माण कर रहे थे आज महाविस्फोट के 14 खरब वर्ष तारों के साथ उनका सौर मण्डल बन चुका था परमाणु मिलकर कठिन अणु बना चुके है जिसमें से कुछ कठिन कण आज पृथ्वी पर मौजूद जीवन के मूलभूत कण हैं यही नहीं ब्रह्माण्ड का अब भी विस्तार हो रहा है। विस्तार की गति बढती जा रही है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के इस महाविस्फोट को समझने के लिए फ्रांस और स्विटजरलैण्ड की सीमा पर सर्न में एल एच सी (लार्ज हेड्रॉन कोलाइडर) में एक करोड सूक्ष्म बिग – बैग विस्फोट किये गये हैं सी. ई. आरतन की अगुवाई में हो रहे इस महाप्रयोग में अब तक प्रति सैकण्ड कणों में सौ टक्कर कराई जा रहीं है। इसे प्रति सैकण्ड तीन सौ कणों तक ले जाया जायेगा। वैज्ञानिकों के मुताबिक महाविस्फोट के एक सैकण्ड के एक अरब वे हिस्से में क्या हो रहा था। इसकी एक झलक सुक्ष्म रूप में यह प्रयोग दिखा रहा था। पिछले वर्ष महाप्रयोग में वैज्ञानिकों ने गॉड पार्टिकल मिलने की बात कही है। हिंग्स बोसोन की खोज ने माना गया था कि गॉड पार्टिकल के माध्यम से वैज्ञानिक अन्तरिक्ष के भविष्य का आकलन करने मे सक्षम होंगे।

इस प्रकार हमने वेदों, उपनिषदों एवं दर्शनों में सृष्टि प्रक्रिया का अध्ययन किया। वेद जिस 'एक' का आश्रय लेकर चले उसे उपनिषदों ने ब्रह्म कह दिया। चार्वाक तो पूणर्तः भौतिकवादी दर्शन है उसने तो इस सम्पूर्ण विश्व को स्वभाववादी माना है। जिस परमाणुवाद की चर्चा न्यायवैशेषिक करता है आधुनिक विज्ञान भी उसी का अनुसरण करता नजर आता है आधुनिक सृष्टि के विषय में बिग बैग सिद्वान्त है जो कि फ्रांस एवं स्विटरजरलैण्ड की सीमा पर स्थित जेनेवा में सर्न में चल रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र उमेश– भारतीय दर्शन उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ पंचम सं. – 2003
2. सिन्हा प्रो. हरेन्द्र प्रसाद – भारतीय दर्शन की रूपरेखा मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन पंचम सं. – 1993, पुनमुर्द्रण 2013
3. गैरोला वाचस्पति – भारतीय दर्शन लोक भारती प्रकाशन पंचम सं. 2009
4. तातेड प्रो. (डॉ) सोहनराज – भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणायें लिट्रेरी सर्किल प्रकाशन सं. 2011